

**शुद्धमांस** पुं. (तत्.) पकाया हुआ ऐसा मांस जिसमें हड्डी न हो।

**शुद्धविराट** पुं. (तत्.) विराट छंद, एक समवर्णिक छंद जिसके प्रत्येक चरण में क्रमशः मगण, सगण, जगण और गुरु के योग से 10 वर्ण होते हैं।

**शुद्धसत्त्व** वि. (तत्.) शुद्ध मन वाला, शुद्ध हृदय वाला पुं. 1. रजोगुण और तमोगुण से रहित सत्त्व गुण 2. परमात्मा की उचित शक्ति जो संसार का उपादन कारण है।

**शुद्धहृदय** वि. (तत्.) शुद्ध मन वाला, शुद्ध सत्त्व।

**शुद्धांत** पुं. (तत्.) 1. रनिवास, राजाओं का अंतःपुर जो शुद्ध और पवित्र माना जाता था, धवल गृह।

**शुद्धांता** स्त्री. (तत्.) रानी, राजपत्नी।

**शुद्धा** स्त्री. (तत्.) कुटजबीज, इंद्रजौ, कुटज वृक्ष के बीज जो औषधोपयोगी होते हैं।

**शुद्धाचार** पुं. (तत्.) शुद्ध आचरण और व्यवहार वि. शुद्ध आचरण और व्यवहार वाला।

**शुद्धात्मा** पुं. (तत्.) शिव का एक नाम वि. पवित्र, साफ हृदयवाला।

**शुद्धाद्वैत** पुं. (तत्.) वल्लभाचार्य द्वारा स्थापित एक वेदांतिक संप्रदाय जिसमें मायारहित ब्रह्म को अद्वैत तथा संपूर्ण जगत को उसी की लीला का विलास माना जाता है।

**शुद्धापहनुति** स्त्री. (तत्.) अलंकार शास्त्र में अपहनुति अलंकार का एक भेद जिसमें अति सादृश्य के कारण सत्य होने पर भी उपमेय को असत्य मानकर उपमान को सत्य सिद्ध किया जाता है।

**शुद्धाशुद्ध** वि. (तत्.) शुद्ध और अशुद्ध, शुद्ध या अशुद्ध।

**शुद्धाशुद्धि** स्त्री. (तत्.) शुद्ध और अशुद्ध होने की अवस्था या भाव।

**शुद्धि** स्त्री. (तत्.) 1. शुद्ध होने की अवस्था या भाव, शुद्धता, स्वच्छता, पवित्रता, शुचिता, मार्जन 2. द्युति, चमक 3. ऋण आदि का

चुकता होना या चुकाया होना 4. गणित में घटाने की क्रिया 5. एक ऐसा धार्मिक कृत्य जिसमें दूसरे धर्म में परिवर्तित होने के कारण अशुद्ध तथा अपवित्र हुए व्यक्ति को शुद्ध करके पुनः धर्म में मिलाया जाए।

**शुद्धिकंद** पुं. (तत्.) लहसुन।

**शुद्धिपत्र** पुं. (तत्.) 1. पुस्तकों आदि के अंत में लगाया जाने वाला वह पत्र जिससे पुस्तक में रह गई अशुद्धियाँ और उनके शुद्ध रूप लिखे जाते हैं 2. समाचारपत्र आदि में पूर्वप्रकाशित अशुद्धि अथवा गलत सूचना को शुद्ध करने वाली प्रकाशित सूचना 3. किसी व्यक्ति के प्रायश्चित्त करने के पश्चात् शुद्धि के प्रमाण हेतु पंडितों द्वारा दिया जाने वाला प्रमाण पत्र।

**शुनक** पुं. (तत्.) 1. कुत्ता 2. भृगुवंश के एक गोत्र प्रवर्तक ऋषि।

**शुनहोत्र** पुं. (तत्.) भारद्वाज ऋषि के पुत्र का नाम जो ऋग्वेद के मंत्रों के द्रष्टा थे।

**शुनामुख** पुं. (तत्.) हिमालय के उत्तर का एक प्राचीन प्रदेश।

**शुनाशीर** पुं. (तत्.) 1. इंद्र 2. सूर्य 3. देवता 4. उल्लू।

**शुनासीर** पुं. (तत्.) दे. शुनाशीर।

**शुनि** पुं. (तत्.) कुत्ता।

**शुनी** स्त्री. (तत्.) कुतिया, कुक्कुरी, कूष्मांडी।

**शुबहा** पुं. (अ.) 1. संदेह, शक 2. धोखा 3. भ्रम।

**शुभंकर** वि. (तत्.) मंगलकारी, शुभकारी, कल्याणकारी।

**शुभ** पुं. (तत्.) 1. कल्याणकार, मंगल, अच्छा 2. पदुम काठ, पद्म काष्ठ, एक सुगंधित लकड़ी 3. चाँदी 4. बकरा 5. एक आभूषण 6. जल 7. विष्कंभादि सत्ताईस योगों में से एक योग ज्यौ. वि. चमकीला, सुंदर, अनुकूल, सुखद, भाग्यशाली।